IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 23, Issue 12, Ser. 6 (December 2018) 79-86
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले का नारीवादी दर्शन का अध्ययन

सुनील कुमार बौद्ध

प्रवक्ता, इतिहास विभाग, बाबा मोहनराम किसान सह शिक्षा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिवाड़ी, अलवर (राज.)

सारांशः –

ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई फुले का नारीवाद दर्शन, शिक्षा, समानता और सामाजिक न्याय पर आधारित था। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा, सम्मान और स्वतंत्रता दिलाने के लिए अथक प्रयास किए, और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। उनका मानना था कि महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार मिलने चाहिए और शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए । फुले का नारीवाद दर्शन, भारत में नारीवादी आंदोलन के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा रहा है। उनके विचारों ने महिलाओं को सशक्त बनाने और सामाजिक न्याय की स्थापना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. इनका मूल उद्देश्य स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार प्रदान करना, बाल विवाह का विरोध, विधवा विवाह का समर्थन करना रहा है। फुले समाज की कुप्रथा, अंधश्रद्धा की जाल से समाज को मुक्त करना चाहते थे। अपना सम्पूर्ण जीवन उन्होंने स्त्रियों को शिक्षा प्रदान कराने में, स्त्रियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने में व्यतीत किया.१६ वी सदी में स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी। फुले महिलाओं को स्त्री–पुरुष भेदभाव से बचाना चाहते थे। उन्होंने कन्याओं के लिए भारत देश की पहली पाठशाला पुणे में बनाई थीं। स्त्रियों की तत्कालीन दयनीय स्थिति से फुले बहुत व्याकुल और दुखी होते थे इसीलिए उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि वे समाज में क्रांतिकारी बदलाव लाकर ही रहेंगे। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी सावित्रीबाई फुले को स्वयं शिक्षा प्रदान की। सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला अध्यापिका थीं।उन्होंने विधवाओं और महिलाओं के कल्याण के लिए बहुत काम किया, इसके साथ ही किसानों की हालत सुधारने और उनके कल्याण के लिए भी काफी प्रयास किये। स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी शिक्षा के लिए फुले ने 1848 में एक स्कूल खोला। यह इस काम के लिए देश में पहला विद्यालय था। लड़कियों को पढ़ाने के लिए अध्यापिका नहीं मिली तो उन्होंने कुछ दिन स्वयं यह काम करके अपनी पत्नी सावित्री फुले को इस योग्य बना दिया। कुछ लोगों ने आरम्भ से ही उनके काम में बाधा डालने की चेष्टा की, किंतु जब फुले आगे बढ़ते ही गए तो उनके पिता पर दबाब डालकर पति–पत्नी को घर से निकालवा दिया इससे कुछ समय के लिए उनका काम रुका अवश्य, पर शीघ्र ही उन्होंने एक के बाद एक बालिकाओं के तीन स्कूल खोल दिए ।

शब्द कुंजीः – महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई फुले की समाज सुधार में भूमिका, महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले का नारीवादी दर्शन,अनुसंधान विषय का वर्तमान में महत्व एवं प्रासंगिकता ।

परिचय :–

महात्मा ज्योतिराव गोविंदराव फुले एक भारतीय समाजसुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक तथा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। इन्हें महात्मा फुले एवं ''जोतिबा फुले के नाम से भी जाना जाता है। सितम्बर 1973 में इन्होने महाराष्ट्र में सत्य शोधक समाज नामक संस्था का गठन किया। महिलाओं व पिछडे और अछूतो के उत्थान के लिये इन्होंने अनेक कार्य किए। समाज के सभी वर्गो को शिक्षा प्रदान करने के ये प्रबल समथर्क थे। वे भारतीय समाज में प्रचलित जाति पर आधारित विभाजन और भेदभाव के विरुद्ध थे ।

महात्मा ज्योतिबा फुले का जन्म 1827 ई. में पुणे में हुआ था। एक वर्ष की अवस्था में ही इनकी माता का निधन हो गया। इनका लालन–पालन एक बायी ने किया। उनका परिवार कई पीढ़ी पहले सतारा से पुणे आकर फूलों के गजरे आदि बनाने का काम करने लगा था। इसलिए माली के काम में लगे ये लोग 'फुले' के नाम से जाने जाते थे। ज्योतिबा ने कुछ समय पहले तक मराठी में अध्ययन किया, बीच में पढाई छूट गई और बाद में 21 वर्ष की उम्र में अंग्रेजी की सातवीं कक्षा की पढाई पूरी की। इनका विवाह 1840 में सावित्री बाई से हुआ, जो बाद में स्वयं एक प्रसिद्ध समाजसेवी बनीं। दलित व स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में दोनों पति–पत्नी ने मिलकर काम किया वह एक कर्मठ और समाजसेवी की भावना रखने वाले व्यक्ति थे।

सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ था। उनके पिता का नाम खंडोजी नेवसे और माता का नाम लक्ष्मी था। उनका जन्म एक ऐसे घर में हुआ था जहाँ उनके पिता किताब लेने के लिए लड़की के खिलाफ थे। सावित्री के जीवन में हुई घटना से इस बात की पुष्टि स्पष्ट होती है, जब बचपन में एक बार वह जल्दबाज़ी में एक अंग्रेजी पुस्तक के पन्ने पलट रही थी, अचानक उसके पिता ने उसे ऐसा करते हुए देख लिया और वह बहुत ही अत्याचार कर रही थी, यही नहीं, छीन लिया पुस्तक और इसे खिड़की से बाहर फेंक दिया, और इसे दोबारा न पढ़ने के सख्त निर्देश भी दिए। उस समय सावित्री को पढ़ना भी नहीं आता था और न ही उसकी उम्र थी कि वह पढ़ाई के महत्व जैसे विषय की गहराई को समझ सके। लेकिन कहीं न कहीं इस घटना ने उसके मन में विद्रोह के बीज बो दिए थे, हालाँकि वह उस समय चुप रही। सावित्रीबाई का विवाह मात्र नौ वर्ष की आयु में 1840 में 13 वर्षीय ज्योतिराव फुले से हुआ था। संभवतः, यह बैठक सावित्री बाई के इस धरती पर जन्म लेने के उद्देश्य को पूरा करने का पहला चरण था। बचपन में, एक ही मौन सावित्री जो अपने पिता को पुस्तक रखने के लिए भी नहीं रोक सकती थी, महात्मा ज्योतिबा फुले की पत्नी बनकर समाज की पहली आवाज बन गई। ज्योतिबा फुले शिक्षा के प्रबल समर्थक थे और शिक्षा को महिलाओं के आत्मनिर्भरता और सामाजिक अन्याय से मुक्ति के लिए एकमात्र साधन मानते थे। यही कारण था कि सबसे पहले उन्होंने अपनी अनपढ़ पत्नी सावित्री को न केवल शिक्षित किया बल्कि उन्हें अन्य महिलाओं को पढ़ाने की जिम्मेदारी भी दी। यह निस्संदेह सावित्री बाई के लिए एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य था। यह एक ऐसा समाज था जहाँ अधिकांश समाज महिलाओं को शिक्षित करने का विरोध करता था। उस

समय केवल एक ही प्रथा थी कि लड़कियों की शादी करनी होती है, उन्हें ससुराल से छुट्टी देनी होती है और लड़कियों के लिए घरेलू काम करना जरूरी होता है, उन्हें शिक्षित होने से कोई लेना–देना नहीं होना चाहिए। ऐसे संकीर्ण विचारों की जड़ों तक पहुँचकर, समाज की मानसिकता में गहरी बैठकर, केवल सावित्री बाई फुले जैसी वीरता ही उन्हें खोखला करने जैसा कठिन काम कर सकती थी। सावित्रीबाई फुले की बीमारी के अंतिम दिनों में प्लेग फैल गया। वह मरीजों को बचाने की पूरी कोशिश करती थी, जबकि उसे पता था कि प्लेग एक छूत की बीमारी है। अंत में, रोगियों को बचाने के प्रयास में, वह खुद ही बीमारी से ग्रस्त हो गया और उसकी मृत्यु हो गई।

उद्देश्य :–

1. महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई फुले का नारीवादी दर्शन मका अध्ययन करना ।

2. महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई फुले ने नारी के उत्थान में किए कार्यो की विवेचना करना ।

परिकल्पना : –

1. महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई फुले ने महिला उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।

2. महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई फुले नारीवादी दर्शन का समाज पर सकारात्मक प्रभाव रहा ।

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रह : –

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है। अध्ययन में द्वितीयक दोनों आंकड़ों को शामिल किया गया है। आंकड़ो का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

सावित्रीबाई और ज्योतिराव फुले :–

महात्मा ज्योतिराव और सावित्रीबाई फुले की गिनती भारत के सामाजिक एवं शैक्षिक इतिहास में एक असाधारण युगल के रूप में की जाती है। उन्होंने महिला शिक्षा और सशक्तीकरण की दिशा में तथा जाति एवं लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करने में पथप्रदर्शक का कार्य किया।

वर्ष 1840 में जब बाल विवाह एक सामान्य बात थी, उस समय 10 साल की उम्र में सावित्रीबाई का विवाह ज्योतिराव से कर दिया गया, जो कि उस समय 13 वर्ष के थे। बाद के समय में इस जोड़े ने बाल विवाह का विरोध किया और विधवा पुनर्विवाह का भी वकालत की।

ज्योतिराव फुलेः

ज्योतिराव फुले एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्त्ता, विचारक, जातिप्रथा–विरोधी समाज सुधारक और महाराष्ट्र के लेखक थे। उन्हें ज्योतिबा फुले के नाम से भी जाना जाता है। शिक्षाः वर्ष 1841 में फुले का दाखिला स्कॉटिश मिशनरी हाईस्कूल (पुणे) में हुआ, जहाँ उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। विचारधाराः उनकी विचारधारा स्वतंत्रता, समतावाद और समाजवाद पर आधारित थी। फुले थॉमस पाइन की पुस्तक 'द राइट्स ऑफ मैन' से प्रभावित थे और उनका मानना था कि सामाजिक बुराइयों का मुकाबला करने का एकमात्र तरीका महिलाओं व निम्न वर्ग के लोगों को शिक्षा प्रदान करना था।

प्रमुख प्रकाशनः तृतीया रत्न (1855); पोवाड़ाः छत्रपति शिवाजीराज भोंसले यंचा (1869); गुलामगिरि (1873), शक्तारायच आसुद (1881)।

महात्मा की उपाधिः 11 मई, 1888 को महाराष्ट्र के सामाजिक कार्यकर्त्ता विट्ठलराव कृष्णजी वांडेकर द्वारा उन्हें 'महात्मा' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

समाज सुधार :–

वर्ष 1848 में उन्होंने अपनी पत्नी (सावित्रीबाई) को पढ़ना–लिखना सिखाया, जिसके बाद इस दंपत्ति ने पुणे में लड़कियों के लिये पहला स्वदेशी रूप से संचालित स्कूल खोला, जहाँ वे दोनों शिक्षण का कार्य करते थे।

वह लैंगिक समानता में विश्वास रखते थे और अपनी सभी सामाजिक सुधार गतिविधियों में पत्नी को शामिल कर अपनी मान्यताओं का अनुकरण किया।

वर्ष 1852 तक फुले ने तीन स्कूलों की स्थापना की थी, लेकिन 1857 के विद्रोह के बाद धन की कमी के कारण वर्ष 1858 तक ये स्कूल बंद हो गए थे।

ज्योतिबा ने विधवाओं की दयनीय स्थिति को समझा तथा युवा विधवाओं के लिये एक आश्रम की स्थापना की और अंततः विधवा पुनर्विवाह के विचार के पैरोकार बन गए।

ज्योतिराव ने ब्राह्मणों और अन्य उच्च जातियों की रुढ़िवादी मान्यताओं का विरोध किया और उन्हें "पाखंडी" करार दिया।

वर्ष 1868 में ज्योतिराव ने अपने घर के बाहर एक सामूहिक स्नानागार का निर्माण करने का फैसला किया, जिससे उनकी सभी मनुष्यों के प्रति अपनत्व की भावना प्रदर्शित होती है, इसके साथ ही उन्होंने सभी जातियों के सदस्यों के साथ भोजन करने की शुरुआत की।

उन्होंने जागरूकता अभियान शुरू किया जिसने अंततः डॉ. बी.आर. आंबेडकर और महात्मा गांधी को प्रभावित किया, जिन्होंने बाद में जातिगत भेदभाव के खिलाफ बड़ी पहल की।

कई लोगों का मानना है कि यह फुले ही थे जिन्होंने सबसे पहले 'दलित' शब्द का इस्तेमाल उन उत्पीड़ित जनता के चित्रण के लिये किया था, जिन्हें अक्सर 'वर्ण व्यवस्था' से बाहर रखा जाता था।

सावित्रीबाई फुले :–

- वर्ष 1852 में सावित्रीबाई ने महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिये 'महिला सेवा मंडल' की शुरुआत की।
- सावित्रीबाई ने एक महिला सभा का आह्वान किया, जहाँ सभी जातियों के सदस्यों का स्वागत किया गया और सभी से एक साथ मंच पर बैठने की अपेक्षा की गई।
- उन्होंने वर्ष 1854 में 'काव्या फुले' और वर्ष 1892 में 'बावन काशी सुबोध रत्नाकर' का प्रकाशन किया।
- अपनी कविता 'गो, गेट एजुकेशन' में वह उत्पीड़ित समुदायों से शिक्षा प्राप्त करने और उत्पीड़न की जंजीरों से मुक्त होने का आग्रह करती हैं।
- उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन करते हुए बाल विवाह के खिलाफ एक साथ अभियान चलाया।
- उन्होंने वर्ष 1873 में पहला सत्यशोधक विवाह शुरू किया– दहेज, ब्राह्मण पुजारी या ब्राह्मणवादी रीति–रिवाज़ के बिना विवाह।

उनकी विरासत :–

- ★ वर्ष 1848 में फुले ने पूना में लड़कियों, शूद्रों एवं अति–शूद्रों के लिये एक स्कूल शुरू किया।
- ★ 1850 के दशक में फुले दंपत्ति ने दो शैक्षिक ट्रस्टों की शुरुआत की– नेटिव फीमेल स्कूल (पुणे) और 'द सोसाइटी फॉर प्रोमोटिंग द एजुकेशन ऑफ महार'– जिसके तहत कई स्कूल शामिल थे।
- ★ वर्ष 1853 में उन्होंने गर्भवती विधवाओं के लिये सुरक्षित प्रसव हेतु और सामाजिक मानदंडों के कारण शिशुहत्या की प्रथा को समाप्त करने के लिये एक देखभाल केंद्र खोला।
- ★ बालहत्या प्रतिबंधक गृह (शिशु हत्या निवारण गृह) उनके ही घर में शुरू हुआ।
- ★ सत्यशोधक समाज (द ट्रुथ–सीकर्स सोसाइटी) की स्थापना 24 सितंबर, 1873 को ज्योतिराव–सावित्रीबाई और अन्य समान विचारधारा वाले लोगों द्वारा की गई थी।
- ★ उन्होंने समाज में सामाजिक परिवर्तनों की वकालत की तथा प्रचलित परंपराओं के खिलाफ कदम उठाया जिनमें आर्थिक विवाह, अंतर–जातीय विवाह, बाल विवाह का उन्मूलन और विधवा पुनर्विवाह शामिल हैं।
- ★ साथ ही सत्य शोधक समाज की स्थापना निम्न जाति, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति को शिक्षा देने तथा समाज की शोषक परंपरा से अवगत कराने के उद्देश्य से की गई थी।

महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले का नारीवादी दर्शन :–

विश्व के सभी समाजों में सदियों से नारी त्रासदी की कहानी रही है, जीवन के हर दायरे में चाहे वह सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक हो, उसकी अपनी कोई पहचान और अस्मिता नहीं है। परिवार से लेकर व्यापक समाज तक, नारी की पहचान पुरूष से बंधी है पिता, पति, भाई और बेटा सामाजिकरण की यह प्रक्रिया उसे निश्चित मूल्यों से जोड़ती है, क्योंकि समाज की संरचना सीढ़ीनुमा है, समाज की सबसे निचली सीढ़ी पर खड़ी नारी ने समाज की वर्जनाओं एवं निषेधाज्ञाओं को लांघते हुए पितृसत्ता और जातीयता को हमेशा कड़ी टक्कर दी है। चाहे वह चिंतन का क्षेत्र हो अथवा संघर्ष का दोनों स्तरों पर उसने अपने अस्तित्व व अस्मिता की लड़ाई को प्राचीन काल से लेकर आज तक जारी रखा है। जिस समाज में कुछ वर्ष पूर्व ही निर्धारित समय के बाद घर से निकलने पर प्रतिबंध था, अपने निकट के सगे–संबंधियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों से किसी प्रकार का मेल–जोल नहीं रखा जा सकता था, और बालकों की देखभाल तथा गृहस्थी का कार्य करने में ही नारी का कार्य क्षेत्र सीमित था और यही कार्यक्षेत्र हर वर्ग की नारी के लिए आदर्श माना जाता था । ऐसी पृष्ठभूमि में विविध रोजगार में नारी को कार्य करते देखकर आश्चर्य ही होता है।

भारत में भी नारी की स्थिति में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही है और सफल भी हो रही है। बात चाहे हम राजनीति की करे या व्यवसाय की, बात मीडिया की हो या भारी उद्योग की इंजीनियरिंग, चिकित्सा अंतरिक्ष और वैज्ञानिक शोध की, हर क्षेत्र में नारी ने अपनी योग्यता और दक्षता साबित कर रही है। जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां नारी की प्रभाव उपस्थित न हो।

ज्योतिबा फुले विश्व के पहले महापुरूष थे, जिन्होंने नारी को पुरूष से भी श्रेष्ठ माना है। उनकी दृष्टि में नारी को वे सभी अधिकार प्राप्त होने चाहिए, जो पुरुषों को प्राप्त हैं। यदि पुरुष बहुपत्नि विवाह का अधिकारी है, तो नारी भी बहुविवाह की अधिकारिणी होनी चाहिए अन्यथा पुरुषों का ये अधिकार निषिद्ध कर देना चाहिए। अपने स्पष्ट दृष्टिकोण और तर्क–विश्लेषण द्वारा भावी समाज की वकालत करने वालों में महात्मा ज्योतिबा फुले का नाम अग्रणी है। महात्मा ज्योतिबा फुले ने सोए हुए समाज में जागृति की एक चिंगारी जलाई, महाराष्ट्र के महान समाज सुधारक, विधवा पुनर्विवाह आंदोलन के अगुआ तथा नारी शिक्षा समानता के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबा फुले का जन्म 28 फरवरी 1827 को, पुना (महाराष्ट्र) में माता चिमनावाई तथा पिता गोविन्द राव जी के घर हुआ । ज्योतिबा फुले आधुनिक भारत में दलितों व नारी की शिक्षा व्यवस्था के लिए तथा मजदूरों, किसानों व समाज के कमजोर वर्ग की उन्नति के लिए चलाए गए सशक्त आंदोलन के लिए आज के जनमानस में मानवतावाद के प्रेरक हैं। सदियों से भारतीय समाज सर्वाधिक निन्दनीय पक्ष जातिगत बन्धन से जकड़ा रहा है, इस जातीय अभेद किले की दीवारों को तोड़ने का कार्य करने वाले महापुरूष ज्योतिबा फुले बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के स्वामी थे। 13 साल के उम्र में ज्योतिबा फुले की शादी 9 साल की अबोध बालिका सावित्रीबाई फुले से हुई ।

सावित्रीबाई न केवल ज्योतिबा फुले की अर्धागिंनी थी, बल्कि उनके क्रांतिकारी आंदोलनों की भी अर्धागिंनी बन गयी थी। ज्योतिबा फुले के समान ही सावित्रीबाई फुले भी धैर्य, समर्पण एवं दूर–दृष्टि जैसे अलौकिक गुणों की स्वामिनी थी। उन्होंने नारी सेवा के लिए अपना घर, बच्चे एवं सभी सुखों को त्याग कर कांटों भरे रास्तों पर चल पड़ी थी। सावित्रीबाई का जन्म सतारा जिले के खंडाला तहसील के नयागांव में 3 जनवरी, 1831 ई. में खंडोजी नेवसे पाटिल के घर हुआ था।

इनकी शिक्षा की शुरूआत विवाह के बाद पति द्वारा हुई। ज्योतिबा फुले के समान ही उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले भी अनेक कष्ट सहन करते हुए, समाज की प्रताड़नाए सहते हुए, स्वयं शिक्षित हुई और भारत की प्रथम अध्यापिका का गौरव हासिल कर लिया। उन्होनें नारी शिक्षा आंदोलन हेतु स्वयं को समर्पित कर दी।

अनुसंधान का विषय :–

प्रस्तुत शोध का विषय महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले का नारीवादी दार्शनिक अवधारणाओं का समीक्षात्मक अध्ययन है। महात्मा ज्योतिबा फुले आधुनिक भारत के प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने समाज में सामाजिक व सांस्कृतिक आंदोलन का सूत्रपात किया। वे वर्ण व्यवस्था, जातिभेद, किसानों, मजदूरों एवं नारी के हितों के लिए सदा संघर्ष करते रहें और दलितों और महिलाओं के लिए सदियों से बंद पडे शिक्षा के दरवाजे खोलें, क्योंकि वे जानते थे कि समाज में बदलाव शिक्षा द्वारा ही लाया जा सकता है जिससे वे गरिमापूर्ण जीवन जी सकते है। इसलिए उन्होंने शिक्षा के प्रसार तथा समाज में व्याप्त बुराईयों जैसे बाल–विवाह, बाल हत्या, सती–प्रथा, विधवा महिलाओं की दयनीय दशा, छुआछूत इत्यादि सामाजिक बुराईयों पर कड़ा प्रहार किया तथा भारतीय नारियों को सम्मानजनक स्थिति दिलाने के लिए उन्होंने वास्तव में ही ऐतिहासिक कार्य किया जो है नारी शिक्षा की व्यवस्था, नारी शिक्षा के लिए विद्यालयों की स्थापना ज्योतिबा फुले एवं उनके मित्र सदाशिवराव गोवंदे ने नारी शिक्षा के लिए प्रथम प्रयास अपने ही घर से प्रारंभ करने का निर्णय लिया ।

ज्योतिबा फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को शिक्षित करना प्रारंभ किया और स्वयं कन्याओं की शिक्षा हेतु एक पाठशाला पूना में खोली। कन्या पाठशाला का प्रारंभ केवल 8 छात्राओं से हुआ था, किन्तु शीघ्र ही यह संख्या बढ़कर 48 तक पहुंच गयी। अब तक उन्होंने एक पाठशाला प्रबंधन समिति भी बना ली थी। इस प्रबंध समिति ने 7 सितम्बर, 1851 ई. में एक और बालिका विद्यालय की स्थापना की। तत्पश्चात् 15 मार्च, 1852 ई. में एक और कन्या पाठशाला की स्थापना बेताल पेठ में की। इस प्रकार ज्योतिबा फुले ने 18 विद्यालय खोल दिये थे। इतने कम समय में इन पाठशालाओं की स्थापना करते समय फुले दम्पत्ति को सामाजिक और आर्थिक दोनों समस्याओं से जूझना पड़ा। ज्योतिबा द्वारा किए गए नारी शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए ब्रिटिश सरकार ने जून 1852 में उन्हें सम्मानित करने का निर्णय लिया।

भारत में हमेशा से शिक्षा प्रणाली में सभी सामाजिक तवको को जगह नहीं दी गई थी। नारी और दलित उनमें से दो ऐसे तबके थे। अंधविश्वासी समाज में सावित्रीबाई फुले एक तार्किक महिला थी। उन्होंने हर जातिगत पहचान की नारी के जीवन में शिक्षा के कारण आनेवाले बदलावों की जरूरत को महत्ता दी। उस दौर में समाज में कई नारी विरोधी सामाजिक कुरीतिया चरम पर थी, जैसे जातीय पहचान के आधार पर छूआछूत, सती प्रथा, बाल–विवाह, शिक्षा व्यवस्था में सामाजिक भेदभाव आदि। इन रूढ़ियों को तोड़कर महिलाओं के हित में कई रास्ते बनाने का श्रेय सावित्रीबाई फूले को जाता है। उन्हें नारी और दलितों को शिक्षित करने के प्रयासों के लिए जाना जाता है। ज्योतिबा फुले सावित्रीवाई के पति होने के साथ–साथ उनके जीवन के इस उद्देश्य में उनके हमसफर हितैषी और समर्थक रहे। भारत में नारीवादी सोच की एक ठोस बुनियाद बनाने में सावित्रीबाई का साथ उनके पति ज्योतिबा फुले ने दिया। उन्होंने न केवल कुप्रथाओं को पहचाना बल्कि विरोध किया और समाधान पेश किया ।

सावित्रीबाई ने लड़कियों के लिए न सिर्फ पहला स्कूल ही खोला, बल्कि वे भारत की पहली महिला अध्यापिका बनीं। नारी प्रेरणा की स्रोत सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम अध्यापिका, समाज सेवी, क्रांतिकारी महिला के साथ ही भारत में नारी मुक्ति आंदोलन की प्रेणता भी है। उन्होंने जिस नारी मुक्ति आंदोलन का सूत्रपात किया था, उसकी बदौलत ही आज अनेक नारी उच्च पदों पर पहुच सकी है। सावित्रीबाई का नारी उत्थान में जो अभूतपूर्व योगदान था, वह आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। भारत की हर शिक्षित नारी उनकी ऋणी है। अतः प्रत्येक शिक्षित नारी का यह कर्तव्य बनता है कि वह इस महान् नारी सावित्रीबाई फुले से देश की सभी नारियों को अवगत कराए।

शिक्षा के क्षेत्र में जितना कार्य फुले दम्पत्ति ने किया है वे इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों से लिखा जाने का हकदार है। सही मायनों में नारी उत्थान हेतु उनके द्वारा किए गए प्रयास अभूतपूर्व एवं अद्वितीय है। सावित्रीबाई फुले पूरे देश का गौरव है और देश की हर जागरूक जनता का यह कर्तव्य बनता है कि वे भारतीय नारी शिक्षा की प्रथम हिमायती नारी से अपने देश की नारियों को परिचित कराएं। आज फुले दम्पत्ति के कार्य, उपलब्धि व प्रेरणा से भारत के अन्य राज्यों की सामाजिक स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलता है परंतु फुले दम्पत्ति के गुणों व कार्यों का उचित सम्मान पूरे भारतवर्ष में अब तक प्राप्त नहीं हुआ है।

नारी उत्थान के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबा फुले ने शोषण मुक्त स्वस्थ समाज की स्थापना हेतु अपना अमूल्य योगदान दिया। दलित एवं सभी वर्गों की नारी की स्थिति में सुधार हेतु शिक्षा के प्रचार–प्रसार को प्रोत्साहन करना आवश्यक मानते हुए पाठशालाएं, कन्या पाठशालाएं एवं भारत की प्रथम रात्रि, पाठशाला, महिला छात्रावास आदि खुलवाये। शैक्षिक क्षेत्र में ज्योतिबा फुले का योगदान व शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गये कार्यों की प्रासंगिकता तथा नारी उद्धारक के रूप में उनके कार्यों का तथा नारी शिक्षा में सावित्रीबाई फुले का योगदान नारी के लिए एक आदर्श स्थापित करती है।

अनुसंधान विषय का वर्तमान में महत्व एवं प्रासंगिकता :–

महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले के नारीवादी संबंधी विचारों का अध्ययन वर्तमान में बहुत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। यह विषय वर्तमान समाज में महिलाओं के अधिकारों, समानता, और न्याय के मुद्दों पर प्रकाश डालने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। कुछ महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित हो सकते हैं:

महिलाओं के अधिकार और समानता का मुद्दाः वर्तमान समय में भी विभिन्न स्तरों पर महिलाओं के अधिकार और समानता का मुद्दा महत्वपूर्ण है। नारीवादी दर्शनिकों के विचार और उनकी सोच का अध्ययन करना, वर्तमान महिला सशक्तिकरण और उनके अधिकारों की दिशा में समझने में मदद कर सकता है।

सामाजिक परिवर्तन और समाज में बदलावः इन नेताओं के द्वारा प्रस्तुत विचार समाज में सामाजिक परिवर्तन और समाज में बदलाव की बात करते हैं। वर्तमान समय में भी समाज में न्याय, समानता, और समरसता के मुद्दों पर ध्यान दिया जा रहा है।

नारीवाद के सिद्धांत और समाजः नारीवादी सिद्धांतों का अध्ययन करना वर्तमान समाज में महिलाओं के स्थान और उनके अधिकारों को समझने में मदद कर सकता है।

शिक्षा और सामाजिक बदलावः इन नेताओं ने शिक्षा के महत्व को उजागर किया था और समाज में सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षित व्यक्ति की भूमिका को जागरूक किया था। आज के समय में भी शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

पुराने और वर्तमान की तुलनाः इस अध्ययन से पुराने समय की सोच और वर्तमान के दृष्टिकोण को तुलना करके, महिलाओं के अधिकारों और समानता में हुए परिवर्तनों को समझा जा सकता है।

वर्तमान में भी इन नेताओं के नारीवादी सिद्धांतों का अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज में न्याय, समानता, और समरसता की दिशा में दिशा प्रदर्शित कर सकता है।

वर्तमान ज्ञान में अनुसंधान विषय का योगदान–

अब तक के उपलब्ध ग्रंथों में नारी की शिक्षा, स्वतंत्रता का स्वरूप और उनके अधिकारों को विस्तृत रूप से देखने को नहीं मिलता है अतः मेरे शोध कार्य का यही महत्व है, की पाठकों का विस्तृत रूप से नारी की शिक्षा, स्वतंत्रता और उनके अधिकारों को पढ़ने को मिलेगा जो भविष्य में उनके लिए लाभदायक सिद्ध होगी ।

महात्मा ज्योतिबा फुले का नारीवाद दर्शनः

शिक्षाः

फुले ने महिलाओं की शिक्षा को बहुत महत्व दिया, और उनका मानना था कि शिक्षा ही महिलाओं को सशक्त बना सकती है.

समानताः

उन्होंने पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता की वकालत की, और महिलाओं को वे सभी अधिकार मिलने की बात कही जो पुरुषों को प्राप्त हैं.

सामाजिक न्यायः

फुले ने सामाजिक अन्याय, जैसे कि जाति व्यवस्था और छुआछूत, के खिलाफ आवाज उठाई, और महिलाओं को इन कुरीतियों से मुक्ति दिलाने के लिए काम किया.

स्वतंत्रताः

उन्होंने महिलाओं की स्वतंत्रता पर जोर दिया, और उन्हें अपनी पसंद का जीवन जीने का अधिकार होना चाहिए.

सत्यशोधक समाजः

फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना करना था.

विधवा पुनर्विवाहः

फुले ने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया, और विधवाओं के पुनर्विवाह के लिए काम किया.

गर्भवती विधवाओं के लिए घरः

उन्होंने 1863 में, अपने घर में ही, उच्च जाति की गर्भवती विधवाओं के लिए एक घर शुरू किया, ताकि उन्हें सुरक्षित स्थान मिल सके.

महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई फुले की भूमिकाः –

सावित्रीबाई पूरे देश की महान महिला बन गईं, उन्होंने जाति और धर्म की संकीर्णता से ऊपर उठकर देश की सभी दलित, शोषित और उत्पीड़ित महिलाओं के जीवन के लिए काम किया। महिलाओं की चेतना में सावित्रीबाई फुले के सफल प्रयासों ने आज विशेष रूप से शिक्षित मध्यवर्गीय महिलाओं को उन व्यवसायों और पदों में प्रतिष्ठित किया है, जिनके बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था। जाति और धर्म की सीमित मानसिकता से परे, सर्वे भवन्तु सुखिनः की सीमा में महान भारत की बेटी को बांधना ... ... उसकी प्रशंसा महानता के साथ न्याय नहीं करता।

आज हम जिस तरह के समाज को देख रहे हैं, उसमें कई महान महिलाओं और पुरुषों ने योगदान दिया है। पहली ऐसी महिला शिक्षक सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ था। उन्होंने अपना जीवन वंचित वर्गों, विशेषकर महिलाओं और दलितों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया।

सावित्रीबाई फुले का मानना था कि महिलाओं और शोषितों को शोषण, मुक्ति और विकास के लिए आत्मनिर्भर होने की जरूरत है, जिसमें शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फुले दंपति ने जीवन भर महिलाओं, शोषितों, पीड़ितों, दलितों, विधवाओं और बच्चों के उत्थान के लिए बिना किसी भेदभाव के काम करते रहे।

महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई ने अपने सामाजिक और महिला सुधार आंदोलनों की शुरुआत की, शायद उस समय की निम्न–सामाजिक सोच की अस्पृश्यता के कारण, लेकिन जैसे–जैसे उनके सुधार प्रगति के पथ पर सफल हो रहे थे, वे अपने काम में बढ़ रहे थे। उन्होंने उस समय सभी जातियों की विधवाओं पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ भी जोरदार आवाज उठाई। 28 जनवरी 1853 को, उन्होंने ऐसे पीड़ितों के लिए एक बच्चे की हत्या पर प्रतिबंध लगा दिया। सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले ने अपने घर से सामाजिक सुधार के लिए अपने सभी परिवर्तनकारी कार्य शुरू किए और समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत किए। उन्होंने खुद एक विधवा ब्राह्मण महिला, काशीबाई के एक बच्चे को गोद लिया, और अपने दत्तक पुत्र यशवंत राव को डॉक्टर बनाया और अंतरजातीय विवाह करके जाति और वर्ग से परे एक शिक्षित और सुशिक्षित समाज की स्थापना करने के अपने महान विचार प्राप्त किए। रखा।

महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले का महिलाओं की शिक्षा में योगदानः –

सावित्री बाई फुले ने 1848 में पुणे में अपने पति के साथ मिलकर विभिन्न जातियों की केवल नौ लड़कियों के साथ पूना में पहला गर्ल्स स्कूल स्थापित किया, जहाँ वह खुद पहली शिक्षिका बनीं। इसके अलावा उन्होंने महिला शिक्षकों की एक टीम भी बनाई, कहा जाता है कि फातिमा शेख नाम की एक महिला ने इस टीम में उनका पूरा साथ दिया। सदाशिव गोवंदे ने इस पहले नारी शाला के लिए पुस्तकों का प्रबंधन किया। सावित्री बाई खुद इतनी अच्छी शिक्षिका थीं कि कुछ ही दिनों में उनका स्कूल पूना में एक उत्कृष्ट स्कूल बन गया। इसलिए, उसके बढ़ते महत्व के कारण, कुछ लोगों ने फिर से अत्याचार करना शुरू कर दिया, जिसके कारण सावित्री को कुछ समय के लिए अपना स्कूल बंद करना पड़ा। लेकिन उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति, अपार शक्ति और अदम्य उत्साह ने जल्द ही एक नई जगह एक नए स्कूल की शुरुआत की।

निश्चित रूप से, सावित्री बाई ने उस दौर में महिला शिक्षा द्वारा उठाए गए विद्रोही कदम उठाए, उन्होंने इसे सहन करने के लिए अत्यधिक प्रतिरोध सहन किया। जब वह पढ़ाने के लिए स्कूल के लिए निकली, तो उसने अपने साथ फेंके गए गालियों और कचरे को निपटा दिया। लेकिन जब से वह अपने निस्वार्थ और बिना सोचे समझे सामाजिक महिला जागृति के पवित्र कार्य में लगी हुई थी, इस तरह के कृत्यों ने उसे अपने कर्तव्य पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति नहीं दी। वह अपने साथ एक और साड़ी ले जाती थी और स्कूल पहुंचने के बाद उसने अपने शिक्षण धर्म का निर्वहन करने के लिए एक साफ साड़ी पहनी थी। यहाँ यह उनके व्यक्तित्व का एक बिंदु है कि उन्होंने इस तरह की बाधाओं को सहन नहीं किया, लेकिन एक और साड़ी लेने के विकल्प के माध्यम से, उन्होंने सफलतापूर्वक यह दिखाने की कोशिश की कि ऐसी फलदायी सामाजिक बाधाओं के लिए सावित्री जैसी सकारात्मक ऊर्जा का खर्च। यह अधिक उचित होगा कि सभी विपक्षों को बर्बाद करने के लिए नष्ट न किया जाए, और अपना सारा ध्यान महिला शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति की ओर केंद्रित किया जाए। निस्संदेह वह विजयी हुईं और अपने पति महात्मा फुले के साथ मिलकर, लड़कियों के लिए स्थापित कुल अठारह स्कूल इस जीत के जीवंत हस्ताक्षर बन गए।

सावित्री बाई ने तत्कालीन महिलाओं से संबंधित हर पहलू का गहराई से अनुभव किया और अपने समाधान स्थापित किए, जो न केवल शिक्षा तक सीमित थे, बल्कि कई सामाजिक विसंगतियों से भी संबंधित थे।

निष्कर्ष: –

महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई फुले पति–पत्नी ने 1848 में पुणे के विश्रामबाग वाडा में भारत का पहला लड़कियों का स्कूल स्थापित किया। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया और 1863 में एक सुरक्षित स्थान पर जन्म देने के लिए उच्च जाति की गर्भवती विधवाओं के लिए एक घर शुरू किया। उनका अनाथालय शिशु हत्या की दर को कम करने के प्रयास में स्थापित किया गया था। कई सामाजिक कार्य उनके द्वारा किए गए हैं लेकिन आज भी बहुत से लोग उनके बारे में नहीं जानते हैं, इसका कारण उन्हें पढ़ाए जा रहे पाठ्य पुस्तकों में शामिल नहीं करना है। जैसा कि हम समाज सुधारकों ने अपनी पाठ्य पुस्तकों में समाज सुधारकों के बारे में कई पुरुषों को पढ़ा, लेकिन उच्च सामाजिक सुधार कार्य करने के बाद भी, सावित्रीबाई फुले का नाम नहीं लिया गया। इसके दो कारण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, एक महिला और एक पिछड़ी जाति से। वंचितों और महिलाओं की नायिकाओं को बदलते परिवेश में लंबे समय तक दबाया नहीं जा सकता है। सावित्री बाई फुले को एकमात्र ऐसी महिला कहा जा सकता है, जिन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर न केवल दलितों और महिलाओं की शिक्षा के उत्थान के लिए सफल प्रयास किए, बल्कि तत्कालीन सती प्रथा, बाल विवाह और अशिक्षा और विधवा विवाह के खिलाफ भी जमकर संघर्ष किया। और निराश्रित महिलाओं का जीवन। सामाजिक कार्य करते हुए जैसे उनके लिए एक आवास गृह की स्थापना की, वे क्रांतिकारी दिशा की ओर बढ़े। सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, कवयित्री और वंचितों की एक मजबूत महिला आवाज़ माना जाता है।जाति–विरोधी आंदोलन का नेतृत्व करने और महिलाओं की शिक्षा की वकालत करने के अलावा, फुले ने समाज में गर्भवती विधवाओं को उनके अधिकार दिलाने के लिए ठोस कदम उठाए। 1863 में, उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई की मदद से अपने घर में ही एक शुरुआत की थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

कीर्ति, विमल, महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली अंक 1 एंव अंक–2, एल. जी. प्रकाशन प्रा. लि., अंसारी मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली, 1996.

कीर्ति, विमल, सावित्री फुले जीवनी, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 2009.

वर्मा, डॉ. पी. एस., दलित पीडा महात्मा फुले, विमुक्त जाति ट्रेडिंगप्राइवेट लिमिटेड, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली, 1992.

वर्धन, ए. बी., वर्ग जाति आरक्षण और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष, राजस्थान पीपुल्स हाउस, जयपुर, 1990.

शहा, डॉ. मु ब., भारतीय समाज क्रान्ति के जनक महात्मा ज्योतिबा फुले, राधाकृष्णन प्रकाशन अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, 1998.

खुराना, के.एल. – मॉडेम इंडियन, 2002 लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा – 3

मिशेल, एस.एम. (संपादक) – आधुनिक भारत में दलित, १ ९९९ – विस्तार प्रकाशन, नई दिल्ली

कोटनी, एच। (एडिटेड द्वारा) –कास्ट सिस्टम, अनटच चबिलिटी एंड द डिप्रेस्ड, 1997 प्रिंटेड ऑन राज करनाल इलेक्ट्रिक प्रेस, बी –35 / 9 ळ. ज्. करनाल रोड, दिल्ली 110033

घड़ियाल रेहाना (इसके द्वारा संपादित) – भारतीय समाज में महिलाएं एक पाठक ऋषि प्रकाशन, नई दिल्ली

जोशी, तारकीता लक्ष्मणश्रेष्ठ, 1997 पब्लिशिन डिवीजन, पटियाला हाउस, नई दिल्ली – 110001

पवार, एन.जी. – महात्मा ज्योति राव फूले – भारतीय सामाजिक क्रांति के जनक 1999, पुस्तक एन्क्लेव जियान भवन, ओपी। छ.म्.प्. शांति नगर, जयपुर 302006

कीर, धनंजय – महात्मा ज्योति राव फुले – भारत क्रांति के जनक, 1997, लोकप्रिय प्रकाशन प्रा। लिमिटेड 35–सी पंडित मदन मोहन मोलविया मार्ग, तारदिओ, मुंबई – 400034

पाटिल, प्रो। च्.ळ. महात्मा ज्योति राव फूले, खंड प्प्, शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार, बंबई के 400032 के कोलियेटेड वर्क्स

भारत, 1996 में घेवर, जीएस जाति और जाति, लोकप्रिय प्रकाशन बॉम्बे

उपदेय, एच.सी. भारत में महिलाओं की स्थिति खंड प्प् 1991, अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली

बौद्ध, शान्ति स्वरुप, सावित्री बाई फुले सचित्र जीवनी, सम्यक प्रकाशन, क्लब रोड पश्चिमपुरी, नई दिल्ली, 2004.

कान्त, सुरेश, महात्मा ज्योति राव फुले, स्मारक समिति, किदवई नगर, कानपुर, 1995

गंगवार, डॉ. ममता, सामाजिक क्रान्ति के प्रणेता महात्मा ज्योतिराव फुले साहित्य, निलय प्रकाशन, कानपुर, 2007.

मुरलीधर, जगताप, युगपुरूष महात्मा फुले, चिरित्र साधने प्रकाशन समिति, महाराष्ट्र शासन, मंत्रालय, मुम्बई, 1993.

देसाई, ए. आर., भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, मैकमिलन इण्डिया प्रेस, मद्रास, 1988.

सम्पा, नरके हरि, महात्मा फूले साहित्य और विचार महात्मा फुले, चरित्र प्रकाशन समिति, मुम्बई, 1993.